

मनुर्वैवस्वतः। विश्वे देवाः। गायत्री, २ पुरउष्णिक्, ३ बृहती, ५ अनुष्टुप्

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः। विश्वे सतोमहान्त इत् ॥ ८.०३०.०१

देवासः- हे देवाः। वः- युष्मासु। अर्भकः- शिशुः। नहि- न कोपि। अस्ति- भवति। न।

कुमारकः- नाल्पः। विश्वे सतोमहान्त इत्- सर्वे महान्त एव ॥१॥

इति स्तुतासौ असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च। मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ ८.०३०.०२

इति- एवम्। स्तुतासः- स्तुताः। असथ- भवथ। रिशादसः- हिंसकबाधकाः। ये। त्रयश्च त्रिंशच्च।

स्थ- भवथ। मनोः- विदुषः। देवाः। यज्ञियासः- पूज्याः ॥२॥

ते नस्त्राध्वं तेऽवत त उ नो अधि वोचत।

मा नः पथः पित्र्यान्मानवादधि दूरं नैष्ट परावतः ॥ ८.०३०.०३

ते- अमी। नः- अस्मान्। त्राध्वम्- रक्षत। ते। अवत- तर्पयत। नः- अस्मभ्यम्। अधि। वोचत-

उपदिशत। पित्र्यात् मानवात् पथः- सनातनविद्वन्मार्गात्। नः- अस्मान्। मा। दूरं परावतः। नैष्ट-

मा नयत ॥३॥

ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत। अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ॥ ८.०३०.०४

ये। देवासः- देवाः। इह- अत्र। विश्वे- सर्वे। वैश्वानराः- सर्वनरहिताः। स्थन- भवथ। ते।

अस्मभ्यम्- नः। सप्रथः- पृथु। शर्म- क्षेमम्। गवे- अस्माकं धेनवे चिद्रश्मये। अश्वाय- तुरगाय।

प्राणाय। यच्छत- दत्त ॥४॥